रोटी का कोई धर्म नही होता
पानी की कोई जात नही होती

जहाँ इंसानियात जिंदा है
वहां मजहब की कोई बात नही होती,

चैन से जीने के लिए
दो कपड़ा चार रोटी ही काफी है

पर बेचैनी से जीने के लिए
चार गाडी और तीन घर भी कम है।

"सच्ची खोज अच्छी खबर"

ज्ञान सरोवर

जीवन में इतने व्यस्त रहिए कि पछतावा, डर, दुख, नफरत के लिए टाइम ही ना रहे याद रखें जीवन में खाली व्यक्ति ही सबसे ज्यादा दुखी रहता है...

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ा : 17 अंक : 39 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 20 नवम्बर से 26 नवम्बर, 2025 पृठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये

निकाय चुनाव तक रोक दें एसआईआर, आयोग के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंची केरल सरकार

नई दिल्ली (संवादसूत्र)। केरल सरकार ने राज्य में भारतीय चुनाव आयोग (ईसीआई) द्वारा वर्तमान में किए जा रहे मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को स्थगित करने की मांग करते हुए सर्वोच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है। संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत दायर एक रिट याचिका में राज्य ने तर्क दिया है कि स्थानीय स्वशासन संस्थाओं (एलएसजीआई) के चुनावों के साथ–साथ एसआईआर कराने से गंभीर प्रशासनिक चुनौतियाँ उत्पन्न होंगी और चुनावों के सुचारू संचालन में बाधा उत्पन्न होगी। राज्य ने स्पष्ट किया कि यद्यपि वह बाद में एसआईआर प्रक्रिया की वैधता को चुनौती देने का अधिकार सुरक्षित रखता है, लेकिन वर्तमान याचिका केरल में संशोधन प्रक्रिया को स्थगित करने पर केंद्रित है। केरल में 1,200 स्थानीय निकाय चुनाव (एलएसजीआई) हैं, जिनमें 941 ग्राम पंचायतें, 152 ब्लॉक पंचायतें, 14 ज़िला पंचायतें, 87 नगर पालिकाएँ और 6 निगम शामिल हैं, जो कुल मिलाकर 23,612 वार्डों को कवर करते हैं। चुनाव 9 और 11 दिसंबर को दो चरणों में होने हैं। एसआईआर 4 नवंबर को शुरू हुआ, और 4 दिसंबर को मसौदा मतदाता सूची प्रकाशित होनी थी, जिससे पूरे संशोधन को लागू करने के लिए केवल एक महीना बचा है। राज्य का तर्क है कि यह समय–सीमा स्थानीय निकाय चुनावों की तैयारियों से गंभीर रूप से टकराती है। याचिका के अनुसार, स्थानीय निकाय चुनाव कराने के लिए 68,000 सुरक्षा कर्मचारियों के अलावा 1,76,000 कर्मियों की आवश्यकता है। एसआईआर को ही 25,668 अतिरिक्त कर्मियों की आवश्यकता है, जिसके बारे में राज्य का कहना है कि इससे प्रशासनिक मशीनरी पर "गंभीर दबाव" पड़ता है और नियमित शासन–प्रशासन ठप होने का खतरा है। याचिका में संविधान के अनुच्छेद 243–ई और 243–यू के साथ–साथ केरल पंचायत राज अधिनियम की धारा 38 और केरल नगर पालिका अधिनियम की धारा 94 का हवाला दिया गया है, जो सभी पिछली परिषदों की पहली बैठक के पाँच वर्षों के भीतर चुनाव कराने का आदेश देते हैं। नए एलएसजीआई सदस्यों को 21 दिसंबर से पहले शपथ लेनी होगी। इसके विपरीत, केरल का तर्क है कि इस समय विशेष मतदाता सूची संशोधन करने की कोई संवैधानिक बाध्यता नहीं है, और चुनाव आयोग ने तत्काल एसआईआर की आवश्यकता वाले कोई विशेष कारण नहीं बताए हैं।

अमित शाह की अध्यक्षता में उत्तरी क्षेत्रीय परिषद की अहम बैठक; दिल्ली विस्फोट पीड़ितों को श्रद्धांजलि

नई दिल्ली (संवादसूत्र)। फरीदाबाद में उत्तरी क्षेत्रीय परिषद की 32वीं बैठक एक गंभीर माहौल में शुरू हुई। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने आठ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के शीर्ष नेतृत्व के साथ 10 नवंबर को दिल्ली में हुए कार बम विस्फोट के पीड़ितों को श्रद्धांजलि देने के लिए दो मिनट का मौन रखा। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की अध्यक्षता में हुई इस बैठक में हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब और राजस्थान के मुख्यमंत्रियों के साथ–साथ दिल्ली, जम्मू–कश्मीर, लद्दाख और चंडीगढ़ के उपराज्यपाल और प्रशासक भी शामिल हुए। केंद्र, राज्य सरकारों और केंद्र शासित प्रदेशों के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। परिषद केंद्र और सदस्य राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों के बीच मुद्दों और विवादों के समाधान और प्रगति के लिए एक मंच प्रदान करती है। इसमें राष्ट्रीय महत्व के मुद्दे शामिल हैं, जिनमें महिलाओं और बच्चों के खिलाफ यौन अपराधों के मामलों की त्वरित जाँच और उनके त्वरित निपटारे के लिए फास्ट ट्रैक विशेष न्यायालयों (एफटीएससी) का कार्यान्वयन शामिल है। बैठक में प्रत्येक गाँव के निर्दिष्ट क्षेत्रों में भौतिक बैंकिंग सुविधाएँ प्रदान करने, आपातकालीन प्रतिक्रिया सहायता प्रणाली (ईआरएसएस–112) को लागू

करने और पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, शहरी नियोजन और सहकारी प्रणाली को मजबूत करने सहित विभिन्न क्षेत्रीय स्तर के साझा हित के मुद्दों पर भी चर्चा हुई। शाह परिषद के अध्यक्ष हैं और हरियाणा के मुख्यमंत्री इसके उपाध्यक्ष हैं। यह बैठक गृह मंत्रालय के अंतर–राज्यीय परिषद सचिवालय द्वारा आयोजित की जा रही है, जिसकी मेज़बानी हरियाणा सरकार कर रही है। राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 की धारा 15 से 22 के अंतर्गत, उत्तरी क्षेत्रीय परिषद सहित पाँच क्षेत्रीय परिषदों की स्थापना की गई। एक सदस्य राज्य का मुख्यमंत्री (प्रत्येक वर्ष बारी–बारी से) उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करता है। प्रत्येक सदस्य राज्य से, राज्यपाल दो मंत्रियों को परिषद के सदस्य के रूप में नामित करते हैं। प्रत्येक क्षेत्रीय परिषद ने मुख्य सचिव स्तर की एक स्थायी समिति भी गठित की है। राज्यों द्वारा प्रस्तावित मुद्दों को प्रारंभ में संबंधित क्षेत्रीय परिषद की स्थायी समिति के समक्ष चर्चा के लिए प्रस्तुत किया जाता है। स्थायी समिति द्वारा विचार–विमर्श के बाद, शेष मुद्दों को आगे विचार–विमर्श के लिए क्षेत्रीय परिषद की बैठक में प्रस्तुत किया जाता है। इस विश्वास के साथ कि मजबूत राज्य एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण करते हैं, क्षेत्रीय परिषदें दो या दो से अधिक राज्यों या केंद्र और राज्यों को प्रभावित करने वाले मुद्दों पर संवाद और चर्चा के लिए एक संरचित तंत्र प्रदान करती हैं और इसके माध्यम से आपसी सहयोग बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करती हैं।

मुंबई कलंबोली मार्केट कमेटी की मिटिंग सम्पन्न

मुंबई कलंबोली मार्केट कमेटी की द्वितीय मीटिंग शुक्रवार चेयरमैन प्रह्लाद प्रजापती की अध्यक्षता मे 14 नवंबर 2025 को मार्केट कमेटी कार्यालय कलंबोली मे संपन्न हुई।

जितेश भंसाली–उप चेयरमैन,

अशोक भंडारी, नरसीराम चौधरी,भरत कनकिया सदस्यगण एंव माथाडी कामगार नेता गुलाबराव जगताप, कमेटी सी.ई.ओ.मिलिंद भालेराव

एव एम.एम.आर.डी.ए. सदस्य नितीन कदम, आर.टी.ओ. पनवेल इन्स्पेक्टर कल्याणी पाटील उपस्थित रहे।

मिटिंग में अनेक विषयो पर विस्तृत चर्चा हुई जिसमे मुख्य विषय कलमबोली में व्यापार सुविधा हेतू 10 नये रस्ते बनाने के लिए टेकनिकल स्वीकृती हेतु एमएमआरडिए से बातचीत शुरु करनी।

सभी स्थानो पर सुरक्षा के लिए सुरक्षारक्षक एंव cctv सही तरह से कार्यान्वित हो इसके लिए कार्यवाही करनी।

जो रस्ते का काम चालु है उसे जल्द से जल्द पुरा करके प्लॉट ऑनर्स के लिए आवागमन सुविधा उपलब्ध करवानी। मार्केट में साफ सफाई पर विशेष ध्यान रखते हुए स्वच्छ कलंबोली स्वच्छ मुंबई बनाना। एव कामगारो के लिए उचित व्यवस्था करना।

मार्केट हित मे अनेक विषयो पर चर्चा करके सकारात्मक कार्य करने का निर्णय लीया।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी

(डॉ. राघवेंद्र शर्मा)

भारत के इतिहास में कुछ नाम ऐसे हैं जो केवल व्यक्ति नहीं, बल्कि युगों–युगों तक प्रेरणा के स्रोत बने रहते हैं। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के, 'मनु' से 'महारानी' और फिर 'वीरांगना' बनने तक का सफर, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वह स्वर्णिम अध्याय है, जिसे हर भारतीय गर्व से याद करता है। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की ज्वाला में अपने जीवन की आहुति दे देने वाली इस असाधारण महिला का जीवन, शौर्य, स्वाभिमान और मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम का जीवंत उदाहरण है।

रानी लक्ष्मीबाई का जन्म एक ऐसे समय में हुआ जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी अपनी 'हड़प नीति' और अन्य कुटिल चालों से भारतीय रियासतों को निगल रही थी। एक साधारण पृष्ठभूमि से आकर, शास्त्रों के साथ शस्त्रों की शिक्षा ग्रहण करने वाली मणिकर्णिका (मनु) का विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव नेवालकर से हुआ और वह 'लक्ष्मीबाई' बन गईं। झांसी की रानी के रूप में उन्होंने केवल राज–काज ही नहीं संभाला, बल्कि उस समय की रूढ़िवादी सामाजिक बेड़ियों को भी तोड़कर घुड़सवारी, तलवारबाजी और सैन्य प्रशिक्षण में अपनी निपुणता सिद्ध की।

स्वाभिमान का शंखनाद

रानी के जीवन का निर्णायक मोड़ तब आया जब राजा गंगाधर राव के निधन के बाद, लॉर्ड डलहौज़ी ने दत्तक पुत्र दामोदर राव को झाँसी का उत्तराधिकारी मानने से इनकार कर दिया और राज्य को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने की घोषणा की। यहीं से एक रानी का वीरांगना के रूप में उदय हुआ। रानी लक्ष्मीबाई ने गर्जना की, "मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी!" यह केवल एक वाक्य नहीं था, बल्कि भारतीय स्वाभिमान का वह शंखनाद था, जिसने सोए हुए राष्ट्र को जगाया।

ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध उनकी अडिगता और विरोध ने उन्हें उस महासंग्राम का केंद्रीय चेहरा बना दिया, जिसने भारत में अंग्रेजी शासन की नींव हिला दी थी। रानी ने एक ऐसी सेना का गठन किया जिसमें पुरुषों के साथ–साथ महिलाओं ने भी कंधे से कंधा मिलाकर युद्ध किया। झलकारी बाई जैसी उनकी सहयोगी ने नारी शक्ति और निष्ठा का नया मानदंड स्थापित किया।

रणक्षेत्र में अद्वितीय पराक्रम

झाँसी के किले पर जनरल ह्यूरोज़ के नेतृत्व में ब्रिटिश सेना के आक्रमण का रानी ने जिस अद्भुत साहस से सामना किया, वह आज भी रोमांच भर देता है। भारी संख्या बल और आधुनिक हथियारों से लैस अंग्रेजों के सामने मुट्ठी भर सैनिकों के साथ डटे रहना, रानी की अदम्य इच्छाशक्ति और कुशल नेतृत्व क्षमता का प्रमाण है। किले से बाल–पुत्र दामोदर राव को पीठ पर बांधकर, घोड़े पर सवार होकर उनका निकलना, साहस और मातृत्व की पराकाष्ठा को दर्शाता है। झाँसी से निकलकर, कालपी और ग्वालियर तक उन्होंने विद्रोही ताकतों का नेतृत्व किया। तात्या टोपे जैसे महान योद्धाओं के साथ मिलकर उन्होंने अंग्रेजों को कड़ी टक्कर दी। ग्वालियर में, वीरगति प्राप्त करने से ठीक पहले, रानी ने अपने अंतिम युद्ध में जो शौर्य दिखाया, उसने जनरल ह्यूरोज़ को भी कहने पर मजबूर कर दिया कि "विद्रोहियों में वह अकेली मर्द थी।" मात्र 29 वर्ष की अल्पायु में 18 जून 1858 को उनका बलिदान हुआ, लेकिन उनका यह बलिदान व्यर्थ नहीं गया।

विरासत और प्रेरणा

रानी लक्ष्मीबाई का जीवन और उनका बलिदान, भारतीय इतिहास की एक अमिट छाप है। वह न केवल स्वतंत्रता संग्राम की नायिका हैं, बल्कि वह हर उस भारतीय महिला के लिए प्रतीक हैं जिसने अपनी पहचान, अधिकार और स्वाभिमान के लिए संघर्ष किया है। उनकी गाथा हमें सिखाती है कि नेतृत्व लिंग या उम्र का मोहताज नहीं होता, बल्कि साहस, संकल्प और न्याय के प्रति समर्पण से आता है। उनकी स्मृति में 'रानी लक्ष्मीबाई पुरस्कार' दिए जाते हैं, जो महिला सशक्तिकरण और असाधारण वीरता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने वाली महिलाओं को सम्मानित करते हैं। यह पुरस्कार हमें याद दिलाते हैं कि रानी की आत्मा आज भी उन महिलाओं में जीवित है जो अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाती हैं और अपने अधिकारों के लिए लड़ती हैं।

आज जब राष्ट्र एक सशक्त और समृद्ध भविष्य की ओर अग्रसर है, हमें रानी लक्ष्मीबाई के बलिदान को केवल इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं रखना चाहिए। हमें उनके निर्भीक स्वभाव, दूरदर्शिता, और राष्ट्रप्रेम को अपने आचरण में उतारना चाहिए। उनका यह आदर्श कि, "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है," हमें आज भी हर प्रकार के शोषण और अन्याय के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा देता है।

सच ही कहा गया है–

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई का शौर्य हमेशा हमें याद दिलाएगा कि मातृभूमि की रक्षा और स्वाभिमान से बड़ा कोई धर्म नहीं है। उनका नाम अमर है।

(विनायक फीचर्स)

भंगेल एलेवेटेड रोड बनने के बावजूद उपयोग में नहीं

उद्घाटन खारिज करो कि जनता आती है

–राजेश बैरागी–

नोएडाः छः अरब और आठ करोड़ की लागत से नोएडा दादरी रोड पर बने भंगेल एलेवेटेड रोड को उपयोग करने में क्या कोई अड़चन है? नोएडा प्राधिकरण महीनों पहले घोषणा कर चुका है कि यह एलेवेटेड रोड बनकर पूरी तरह तैयार है तो इसे उस आम जनता के चलने के लिए क्यों नहीं खोला जा रहा है जो सुबह से शाम तक इसी एलेवेटेड रोड के नीचे जाम में फंसने और अपने गंतव्य तक पहुंचने के लिए सांप सीढ़ी जैसा खेल खेलने के लिए अभिशप्त है। विकसित और तीसरी अर्थव्यवस्था बनने को आतुर भारत एक ऐसा देश भी है जहां परियोजनाओं का समय से पूरा होना और फिर उनका जनता के लिए उपलब्ध होना भी किसी आश्चर्य से कम नहीं होता। नोएडा प्राधिकरण द्वारा हजारों लोगों के प्रतिदिन आवागमन को सुगम बनाने के उद्देश्य से सेक्टर 41 से फेज दो क्षेत्र को जोड़ने वाला महात्वाकांक्षी भंगेल एलेवेटेड रोड ऐसा ही एक उदाहरण है।8 जून 2020 को बनने शुरू हुए इस ऊपरगामी मार्ग को सबसे पहला ग्रहण कोरोना का लगा।इसे उत्तर प्रदेश सेतु निगम ने बनाया है। अलाइनमेंट में आने वाली इमारतों की समस्या,सेतु

निगम की लापरवाही और अन्य विभिन्न कारणों से न केवल इस महत्वाकांक्षी परियोजना के पूरा होने में देरी हुई बल्कि इसके बजट में भी वृद्धि करनी पड़ी। इस पर प्राधिकरण द्वारा 608 करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं। यह एलेवेटेड रोड छः लेन चौड़ा और साढ़े चार किलोमीटर लंबा बनाया गया है। इसके उपयोग में आने से नोएडा दादरी रोड पर बरौला चौराहा से भंगेल तक लगने वाले भारी जाम से लोगों को पूरी तरह मुक्ति मिल जाएगी। यह बनकर पूरी तरह तैयार है। प्राधिकरण ने इसके उद्घाटन के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से समय मांगा है। पिछले लगभग चार महीने में मुख्यमंत्री कई बार यहां आ चुके हैं परंतु प्राधिकरण उनसे इस महत्वपूर्ण एलेवेटेड रोड का उद्घाटन कराने में असफल रहा है। उद्घाटन के बगैर प्राधिकरण इसे उपयोग न होने देने के लिए कृत संकल्प है। हालांकि इससे पहले ऐसे फ्लाईओवर तथा रोड लंबे समय तक उद्घाटित न होने पर जनता द्वारा स्वयं उपयोग में ले लेने के कई उदाहरण हैं। नोएडा के ही महामाया फ्लाईओवर को जनता ने स्वयं उपयोग में लेना शुरू कर दिया था।यूपीसीडा द्वारा साइट पांच से गौतमबुद्धनगर विश्वविद्यालय की ओर बनाया गया फ्लाईओवर भी बगैर उद्घाटन उपयोग किया जा रहा है। क्या भंगेल एलेवेटेड रोड भी किसी दिन जनता द्वारा आगे बढ़कर स्वयं उद्घाटन करने की प्रतीक्षा में है?

आज का दिन विशेष.. पहली बार भारत की रीता फारिया 1966 में बनीं मिस वर्ल्ड...

देश–दुनिया के इतिहास में 17 नवंबर की तारीख ऐसी तारीख है जिसने भारत के सौंदर्य को विश्व पटल पर स्थापित किया। 1966 में इसी तारीख को भारत की रीता फारिया ने मिस वर्ल्ड का खिताब जीता। मिस वर्ल्ड बनने वाली वह पहली एशियाई महिला थीं। रीता फरिया का जन्म मुंबई में 1945 में हुआ। एक साल तक मॉडलिंग की ऊंचाइयों को छूने के बाद रीता ने डॉक्टरी की पढ़ाई

पूरी की और इस क्षेत्र में अपना कॅरियर बनाया। उन्होने मुंबई स्थित ग्रांट मेडिकल कॉलेज और सर जमशेदजी जीजाबाई ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल से एमबीबीएस में स्नातक किया।

इसके बाद वे किंग्स कॉलेज एवं अस्पताल लंदन में उच्च अध्ययन के लिए गईं। 1971 में उन्होने डेविड पॉवेल से शादी की और 1973 में दोनों डबलिन में रहने लगे। उन्होंने दोबारा फैशन की दुनिया में 1998 में फेमिना मिस इंडिया की जज के तौर पर कमबैक किया। विश्व सुंदरी होने के बाद भी उन्होंने डॉक्टरी के पेशे में कैरियर बनाने को प्राथमिकता दिया. वे मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता में भी बतौर जज शामिल हो चुकी है ..

– संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार
(सामाजिक विज्ञान, विज्ञान एवं खेलकूद) (गोरखपुर)...

साहित्य और सत्ता : चोली दामन का साथ

(विवेक रंजन श्रीवास्तव)

आदर्श स्थिति यही है कि साहित्य को राजनीति से दूर रखना चाहिए। किन्तु यह बात सुनने में जितनी सहज लगती है, व्यवहार में उतनी ही कठिन है। साहित्य का उद्देश्य ही समाज की बात करना है, पर जैसे ही साहित्य समाज का प्रतिबिंब बनता है ,वह राजनीति से अनजाने में ही जुड़ जाता है, क्योंकि समाज का हर तंतु राजनीति से रँगा होता है। रसोई से लेकर संसद तक वही भाषा, वही चाल–ढाल, वही सोच विस्तार पा रही है। साहित्यकार चाहे जितना तटस्थ रहने की कोशिश करे, अंततः उसे इसी माहौल की मिट्टी से अपनी काया बनानी पड़ती है।

आदर्श यह है कि साहित्यकार सत्ता से दूरी बनाए रखे। उसका उद्देश्य सत्ता की कृपा प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज की चेतना जगाना होना चाहिए। पर अब यह सीमारेखा गड्मगड्ड हो चली है। साहित्यकार और राजनीतिज्ञ दोनों एक–दूसरे की जरूरत बन चुके हैं। नेता पुरस्कार और पद बाँटकर अपनी चमक बढ़ाते हैं, और कुछ लेखक इन कृपाओं को आत्मगौरव मान बैठते हैं। इस परस्पर सौदेबाज़ी में साहित्य का आत्मबल खो जाता है। रचनाकार को समाज की आत्मा होना था, वह सत्ता की शक्ति बनने की राह में खड़ा दिखता है। राजनीति साहित्य में सीधे नहीं उतरनी चाहिए । उसके निहितार्थ मानवता के पक्ष में होने चाहिए। जब साहित्य, सामाजिक न्याय, समानता, और विवेक की बात करता है, तो वह राजनीति नहीं, नैतिकता का निर्वाह करता है। समस्या तब होती है जब विचारधारा रचना पर हावी हो जाती है। लेखक को तब एक विशेष खेमे का प्रवक्ता मान लिया जाता है। विडंबना यह है कि बिना किसी विचारधारा के समर्थन के भी साहित्य असंभव है, क्योंकि हर रचना के पीछे कोई दृष्टिकोण होता है। फर्क केवल इतना है कि क्या वह दृष्टिकोण स्वतंत्र है या सत्ता–प्रेरित है।

आज साहित्यिक दुनिया में एक नया समीकरण बन रहा है। बरसों तक वामपंथियों ने अपने गुट बनाकर एक–दूसरे को बढ़ाया। अब जब सत्ता दक्षिणपंथियों के हाथ में है, वही खेल दूसरी तरफ से दोहराया जा रहा है। यानी साहित्य अपने मूल रूप में सत्ता का मुखापेक्षी बना हुआ है। कभी पुरस्कारों के लिए नेताओं की चापलूसी, कभी संस्थाओं की अनुशंसा पाने की होड़, कभी आयोजनों में राजनेताओं की उपस्थिति से गौरव पाने की प्रवृत्ति, ये सब साहित्य के लिए आत्मघाती हैं। यह प्रवृत्ति लेखक को विचारशील व्यक्ति से दरबारी व्यक्ति में बदल देती है। चारण , भाट और प्रबुद्ध साहित्यकार क्षीण रेखा से विभाजित हैं। परंतु समाधान सत्ता से कटकर मौन रहना नहीं है। साहित्य को सत्ता से डरना नहीं चाहिए, बल्कि उसे आईना दिखाने का साहस रखना चाहिए। सत्ता चाहे किसी दल की हो, लेखक को सत्य कहना आना चाहिए। सच्चा साहित्य न सरकार के पक्ष में होता है, न विपक्ष में, वह केवल मनुष्य के पक्ष में होता है। व्यंग्यकार इस मुगालते में हैं कि सत्ता का विरोध ही उनका रचना धर्म है।

वही साहित्य अमर होता है जो अपने समय से टकराने का जोखिम उठाता है। जो शाश्वत सत्य का पक्षधर होता है । सत्ता के कृत्रिम नैरेटिव के बीच जो लेखक सत्य बोलता है, वही समाज का असली प्रवक्ता है।

लेखक का दायित्व केवल सप्रयास सुंदर भाषा गढ़ना नहीं, बल्कि विवेक को जिंदा रखना है। आज जब हर मंच पर नारे और विमर्श विचार की जगह ले रहे हैं, तब साहित्य को और सजग रहना होगा। उसे पुरस्कारों की चमक से नहीं, अपने अंतर्मन की सच्चाई से रोशन होना चाहिए। अगर साहित्य सत्ता के इशारों पर लिखे जाने लगे तो वह प्रचार बन जाता है, और अगर समाज की पीड़ा से जुड़कर लिखा जाए तो वह इतिहास बन जाता है।

सत्ता अक्सर साहित्य का इस्तेमाल इतिहास को अपने ढंग से लिखाने के लिए करती है। वह चाहती है कि कवि उसकी जीतों के गीत गाएँ और आलोचक उसकी नीतियों को दर्शनशास्त्र घोषित कर दें। ऐसे समय में स्वतंत्र साहित्य का होना आवश्यक है। वह सत्ता को चुनौती देने वाला होना चाहिए, उसे आईना दिखाने वाला होना चाहिए, क्योंकि साहित्य का जन्म ही इसीलिए हुआ कि मनुष्य को विचार की स्वतंत्रता मिले।

साहित्य और राजनीति के बीच यह जटिल रिश्ता कभी पूरी तरह टूट नहीं सकता। पर यह रिश्ता ऐसा हो जिसमें साहित्य सत्ता का दर्पण बने, उसकी छवि न बने। लेखक की निष्ठा किसी दल या विचारधारा से नहीं, सत्य और संवेदना से होनी चाहिए। तभी साहित्य समाज का विवेक कहलाएगा, तभी उसकी कलम को अर्थ मिलेगा। राजनीति भले सब जगह फैल जाए, साहित्य को हर हाल में स्वतंत्र रहना होगा, क्योंकि अगर साहित्य बिक गया तो समाज सोचने की अपनी अंतिम ताकत खो देगा।

(विनायक फीचर्स)

राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर शुभकामनाएं ....

राष्ट्रीय प्रेस दिवस हर साल 16 नवंबर को मनाया जाता है। दरअसल प्रेस की आजादी की रक्षा के लिए प्रेस परिषद को 4 जुलाई 1966 को बनाया गया, लेकिन प्रेस परिषद ने 16 नंवबर 1966 को काम शुरू किया। इस वजह से हर साल 16 नंवबर को राष्ट्रीय प्रेस दिवस मनाया जाता है। विश्व में आज करीब 55 देशों में प्रेस परिषद है। कुछ देशों में प्रेस परिषद को मीडिया परिषद भी कहा जाता है। परिषद का मकसद था– देश में प्रेस की आजादी को बचाए–बनाए रखने और पत्रकारिता के उच्च मापदंडों की रक्षा में मदद करना। राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर शुभकामनाएं....

–संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार –सामाजिक विज्ञान, विज्ञान एवं खेलकूद (गोरखपुर)....

दिव्य ज्ञान

कामना कर्म को जन्म देती है, कामना खूँटी के समान है और कर्म रस्सी का प्रतीक है। कामना करने वाला व्यक्ति एक गाय जैसी है जो रस्सी के एक सिरे से और दूसरे सिरे से खूँटी से बंधी होती है। कामना करने वाला जीव–आत्मा जन्म–मरण के चक्र को रचकर खूँटी के चारों ओर घूमता रहता है। यही जीवन एक अज्ञानी व्यक्ति जीता है।

"जागो, इससे छुटकारा पाओ।"

नमः शिवाय

आपका मंगल हो।

भारतीय सभी बेटियां बराबर...

भारत में सिर्फ क्रिकेट की ही बेटियां, बेटियां नहीं है अपितु– हॉकी, एथलेटिक्स, शूटिंग, शतरंज, बॉक्सिंग, कुश्ती, कबड्डी एवं अन्य खेलों की भी "बेटियां" है जो विश्व स्तर पर अच्छा परिणाम दे रही हैं. "सोशल मीडिया" व "ग्लैमर" (Glamour) पर मत जाए.. क्योंकि सभी बेटियों (विशेषकर जो अच्छा विश्वस्तरीय रिजल्ट दे रही है) उसके लिए भी बराबर हक, न्याय दें एवं उत्साहित करे। सही चीजों पर जाएं, ग्लैमर (Glamour) पर मत जाए।

–संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार–खेलकूद एवं विज्ञान (गोरखपुर)

वर्तमान में भारत में सैन्य शोध (Disaster and Defence Research) की प्रबल आवश्यकता एवं वृद्धि...

सेना को और डिजाइन करेगी मंडी आईआईटी... मंडी कृ भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी आपदाओं से पार लाभ के लिए अन्वेषण खोज। इसके लिए ट्रस्ट 20 करोड़ रुपये की भर्ती करवा रहा है। मानकीकृत हिमालय रिजन में आ रहे भूकंप, बाढ़ सहित क्लाउड रिज़र्व, भू–संतुलन होने के निष्कर्षों पर शोध हेतु... डीआरडीओ और आईआईटी एवं कई संस्थाओं के बीच एमओयू... . तकनीक के विकास पर बने रहेंगे जोर.... वर्तमान में भारत में आपदा एवं सैन्य शोध (Disaster and Defence Research) की प्रबल आवश्यकता एवं वृद्धि की उम्मीद... एक अच्छा संकेत..

– संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार– विज्ञान, खेलकूद सचिव– इंडियन साइंस राइटर एसोसिएशन (ISWA) (उत्तर प्रदेश) (गोरखपुर)

सम्पादकीय...

गैर–बराबरी घुन

जिस छोटे से तबके के हाथ में धन केंद्रित होता है, सरकारी नीतियों पर उसका शिकंजा कस जाता है। यानी गैर–बराबरी ऐसा घुन है, जो लोकतंत्र को कुतर डालती है। भारत में अमीर– गरीब की खाई तेजी से बढ़ी है। भारत में आर्थिक गैर–बराबरी अत्यधिक बढ़ चुकी है, यह कोई नया तथ्य नहीं है। नई बात सिर्फ यह है कि इस बार जी–20 समूह की तरफ से नियुक्त मशहूर अर्थशास्त्रियों के टास्क फोर्स ने इस ओर ध्यान खींचा है। जोसेफ स्टिग्लिट की अध्यक्षता वाले इस टास्क फोर्स ने गैर–बराबरी बढने़ के परिणामों का भी उल्लेख किया है। साथ ही बताया है कि इस पर किस तरह लगाम लगाया जा सकता है। फिलहाल, जी–20 की अध्यक्षता दक्षिण अफ्रीका के पास है। वहां के राष्ट्रपति सिरिल रामाफोसा की पहल पर ये टास्क फोर्स बना। उसने बताया है कि इस समस्या को नजरअंदाज करना कितना हानिकारक है। टास्क फोर्स के मुताबिक अत्यधिक आर्थिक विषमता से राजनीति पटरी से उतर जाती है, जिससे लोकतंत्र कमजोर होता है। इसके परिणामस्वरूप आर्थिक विकास एवं गरीबी उन्मूलन के प्रयास बाधित होते हैं। साथ ही जलवायु परिवर्तन रोकने की कोशिशें कमजोर पड़ती हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि जिस छोटे से तबके के हाथ में धन का संकेद्रण होता है, सरकारी नीतियों पर उसका शिकंजा कसता चला जाता है। यानी यह ऐसा घुन है, जो लोकतंत्र को कुतर डालता है। टास्क फोर्स के मुताबिक भारत में अमीर और गरीब के बीच संपत्ति की खाई पिछले दो दशकों में तेजी से बढ़ी। साल 2000 से 2023 के बीच देश के शीर्ष एक प्रतिशत लोगों के धन में 62 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। दुनिया में सबसे अमीर एक प्रतिशत लोगों ने 2000 के बाद से पैदा हुई नई संपत्ति का 41 प्रतिशत हिस्सा अपने कब्जे में ले लिया। वहीं दुनिया की निचली 50 प्रतिशत आबादी की संपत्ति में सिर्फ एक प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई। इन आंकड़ों की रोशनी में इसे बेहतर ढंग से समझा जा सकता है कि इस दौर में भारत सहित ज्यादातर लोकतांत्रिक देशों में क्यों ऐसी ताकतों का उदय हुआ, जिनके राज में वहां लोकतांत्रिक आजादियां सिकुड़ी हैं। कारण है सत्ता के केंद्रों पर अत्यधिक धनवान लोगों का बना नया नियंत्र। बहरहाल, महज इस परिघटना को महज समझना पर्याप्त नहीं है। असल सवाल ऐसी राजनीति का है, जिसमें सत्ता आम जन के पास लौटाने की दृष्टि एवं संकल्प हो।

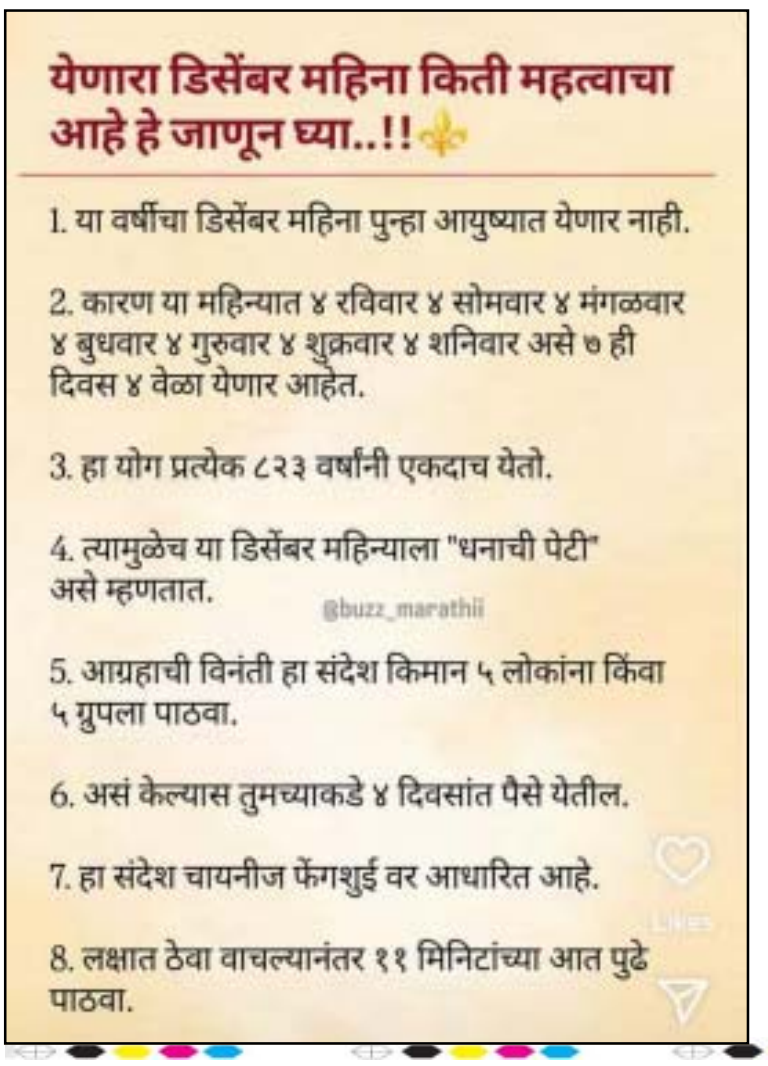

संस्कृति, परंपरा और आस्था की रक्षा करने वालों को सम्मानित करने का दिन है जनजाति गौरव दिवस

भारत का सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय आंदोलन एक दीर्घ और प्रेरणादायी यात्रा रही है, जिसमें हर आयु वर्ग के युवा, महिला, बुजुर्ग और बच्चों ने सक्रिय भूमिका निभाई। जम्मू–कश्मीर से कन्याकुमारी तक और अटक से कटक तक, हर जाति और समुदाय ने "राष्ट्र प्रथम" की भावना को आत्मसात करते हुए मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। इस राष्ट्रीय आंदोलन में भारत की जनजातियाँ भी कभी पीछे नहीं रहीं। उन्होंने सदैव अपने साहस, पराक्रम और अदम्य बलिदान से राष्ट्र की मर्यादा और स्वाभिमान की रक्षा की ।

प्राचीन युग से लेकर मुग़ल और अंग्रेज़ काल तक, जनजातीय समाज ने अपने स्वाभिमान और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए निरंतर संघर्ष किया । हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप के साथ पुंजा भील के नेतृत्व में बारह हज़ार भील सैनिकों ने वीरता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया । उन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर सदा–सदा के लिए अमरता हो गए ।

गोंडवाना की वीरांगना रानी दुर्गावती ने मुग़लों से युद्ध करते हुए अपने राज्य और आत्मसम्मान के लिए बलिदान दिया । उनका जीवन भारतीय नारी शक्ति के लिए साहस और त्याग का प्रतीक बन गया। इसी प्रकार भोपाल की रानी कमलापति ने अपनी अस्मिता की रक्षा के लिए हँसते–हँसते प्राण त्याग दिए। उनका जीवन आत्मसम्मान और पराक्रम की अमर कहानी है ।

ब्रिटिश शासनकाल में भी जनजातीय समाज ने स्वतंत्रता की ज्योति को जलाए रखा। मणिपुर की रानी माँ गाईडिल्यु ने मात्र 13 वर्ष की आयु में ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल फूँक दिया था। उन्होंने अपने क्षेत्र में हो रहे धर्मांतरण का विरोध और नागा समाज में स्वाभिमान की चेतना को जगाया था । उनका जीवन देशभक्ति, त्याग और साहस का अद्वितीय उदाहरण है ।

मध्य भारत की भूमि जनजातीय वीरों की वीरता से अंकित है। 1857 की क्रांति के समय जब संपूर्ण देश स्वतंत्रता की ज्वाला में दहक रहा था, तब मध्यप्रदेश के जनजातीय नायक भी इस संग्राम में अग्रसर हुए ।

बड़वानी के भीमा नायक ने तात्या टोपे को नर्मदा पार कराने में सहयोग दिया और अंबापानी के युद्ध में अंग्रेजों के विरुद्ध वीरता के साथ लड़े । अंग्रेजों ने उन्हें पकड़कर अंडमान की जेल भेज दिया । इसी काल में खाज्या नायक ने सात सौ भीलों की एक संगठित सेना बनाकर अंग्रेज़ों के विरुद्ध मोर्चा खोला । रघुनाथ सिंह भिलाला और सीताराम कँवर ने भी निमाड़ क्षेत्र में विद्रोह कर क्रांति की अलख जगाई ।

निमाड़ के लोगों में चर्चित "मामा टंट्या भील" का नाम इतिहास के स्वर्णाक्षरों में अंकित है । उन्होंने अंग्रेजों के अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाई और गरीबों की सहायता की। अंग्रेज उन्हें "भारतीय रॉबिन हुड" कहते थे । 1889 में फाँसी के फंदे पर चढ़ते हुए उन्होंने भारत माता की सेवा में अपने प्राण न्योछावर कर दिए ।

सन् 1857 में जब पूरे देश में स्वतंत्रता की ज्वाला भड़की, तब जबलपुर के गोंड राजा शंकरशाह और उनके पुत्र रघुनाथ शाह ने भी अंग्रेजों के विरुद्ध जन–जागरण का अभियान प्रारंभ किया । राष्ट्रप्रेम से प्रेरित इन दोनों वीरों ने अपने राज्य में क्रांति की अलख जगाई । अंग्रेजों ने षड्यंत्र रचने के आरोप में उन्हें 14 सितंबर 1858 को गिरफ्तार कर लिया ओर चार दिन तक कठोर यातनाएँ देने के बाद 18 सितंबर 1858 को जबलपुर कोतवाली के सामने तोप के मुँह से बाँधकर उड़ा दिया । वीर योद्धा पिता–पुत्र देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर सदा–सदा के लिए अमर हो गए ।

पूर्वी भारत के वीर तिलका माँझी ने 18वीं शताब्दी में अंग्रेजों के विरुद्ध गुरिल्ला युद्ध छेड़ा । उन्होंने वर्षों तक अंग्रेजों को चुनौती दी। अंततः पकड़े जाने पर जनता में दहशत पैदा करने के लिए अंग्रेजों ने उन्हें चार घोड़ों से बाँधकर घसीटते हुए भागलपुर में ले जाकर फाँसी दे दी। उनका बलिदान स्वतंत्रता संग्राम के प्रारंभिक अध्याय में स्वर्णाक्षरों से अंकित है ।

झारखंड के जनजातीय क्षेत्र में अंग्रेज़ शासनकाल के दौरान ईसाई मिशनरियों द्वारा बड़े पैमाने पर धर्मांतरण किया जा रहा था। इस अन्यायपूर्ण कार्य का बिरसा मुंडा ने दृढ़ता से विरोध किया। उन्होंने जनजाति समाज में जागृति लाने का कार्य किया और स्वाभिमान व धर्मरक्षा का आंदोलन खड़ा किया । उनके नेतृत्व में जनजातीय समाज एकजुट होकर अपनी संस्कृति, परंपरा और आस्था की रक्षा के लिए खड़ा हुआ । अपने साहस, सेवा और नेतृत्व के कारण वे जन–जन के प्रिय बने और "धरती आबा" अर्थात् "धरती पिता" या "बिरसा भगवान" के रूप में पूजे जाने लगे। ऐसे स्वाधीनता सेनानी और धर्मरक्षक योद्धा का जीवन आज भी गरीब, वंचित और जनजातीय समाज के लिए प्रेरणा और आदर्श है ।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में ऐसे असंख्य ज्ञात–अज्ञात जनजातीय वीरों ने भारत माता की बलिवेदी पर हँसते–हँसते अपने प्राण न्यौछावर किए। किंतु दुर्भाग्यवश आज की युवा पीढ़ी को इन महापुरुषों के बारे में बहुत कम बताया गया है । यह हमारे समाज के लिए आत्ममंथन का विषय है।

वर्तमान भारत सरकार ने इन क्रांतिवीरों के योगदान को सम्मानित करने का ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए 10 नवंबर 2021 को केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में 15 नवंबर, बिरसा मुंडा जी के जन्मदिवस को 'जनजाति गौरव दिवस' के रूप में घोषित किया। यह दिवस केवल बिरसा मुंडा जी को ही नहीं, बल्कि उन सभी ज्ञात–अज्ञात जनजातीय बलिदानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर है, जिन्होंने राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी ।

वर्ष 2025, बिरसा मुंडा के जन्म का 150वाँ वर्ष है । यह अवसर हमें स्मरण कराता है कि हमें इन प्रेरणादायी चरित्रों को समाज के समक्ष पुनः प्रस्तुत करना चाहिए । आइए, हम उनके जीवन से यह सीखें कि कैसे एक सामान्य व्यक्ति ने अंग्रेजी सत्ता, धर्मांतरण और पूँजीवाद के विरुद्ध खड़े होकर समाज को संगठित किया और अपने शौर्य, पराक्रम, सेवा तथा धर्मनिष्ठा से "बिरसा मुंडा" से "बिरसा भगवान" बन गए ।

आज हमारा दायित्व है कि हम इन महान राष्ट्रवीरों के आदर्शों को आत्मसात करें, उनके जीवन से प्रेरणा लें और आने वाली पीढ़ियों को उस गौरवशाली इतिहास से परिचित कराएँ । यही उन बलिदानी आत्माओं के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। जब भारत की युवा पीढ़ी इन जनजातीय वीरों की गाथाओं से परिचित होगी, तभी "विकसित भारत, समर्थ भारत" का स्वप्न साकार होगा।

(निखिलेश महेश्वरी)
(विभूति फीचर्स) (लेखक विद्या भारती मध्य भारत प्रान्त के प्रांत संगठन मंत्री हैं।)

तेरा क्या होगा आला.....

(मुकेश"कबीर")

डॉक्टर के हाथ में आला तो देखा था लेकिन अब डॉक्टर हाथ में एके 47 भी रखने लगे यह देखकर आला घबराया और डॉक्टर से बोला कि जब सारे काम मैं कर देता था फिर तुम यह रायफल क्यूँ लटकाने लगे ?

तो डॉक्टर बोला सुन वे आले,गलत फहमी मिटा ले, तू सारे काम नहीं करता था तू सिर्फ उतना ही करता था जितना मैं करवाता था, तुझे सीने पर रखकर धड़कन सुनता था, लेकिन अब मुझे दिल की धड़कन नहीं सुनना,मासूम लोगों की चीखें सुनना है इसलिए रायफल पकड़ ली मैंने। अब तेरे साथ दिक्कत यह है कि तुझे गले में लटकाए रखो और हाथों से गोली दवाई देते रहो, ये डबल मेहनत मैं क्यों करूं जब राइफल में आवाज और गोली एक साथ उपलब्ध हो? अब हमें यह सोचने की टेंशन ही नहीं कि किसको कौन सी गोली देना है, अब सिर्फ एक बटन दबाने की जरूरत है बस बाकी सब अपने आप हो जाता है,पेशेंट का मुँह भी खुल जाता है, जुबान भी बाहर आ जाती है, हमें कहने की जरूरत भी नहीं पड़ती। न अब धड़कन सुनने की जरूरत और न ही अलग से गोली देने की जरूरत इसलिए तेरे जैसा आला हमारे ज्यादा काम का है या यह सर्व सुविधायुक्त राइफ़ल ? अब तो तू सोच तेरा क्या होगा आला.३..।

यह सुनकर आला समझ गया कि कुछ तो गड़बड़ है दया, ये आदमी डाकू तो हो सकता है लेकिन डॉक्टर तो कभी नहीं। दया जिस डॉक्टर के मन में दया नहीं वो सब कुछ होगा लेकिन डॉक्टर नहीं इसलिए आले ने पूछा सच सच बता तू डॉक्टर है या कसाई ?

तब डॉक्टर ने कहा कि तुझे मेरा चोगा और टोपी दिखाई नहीं देती क्या ? डॉक्टर दिखने के लिए और क्या चाहिए ? सफेद चोगा,गोल टोपी और कैबिन में हरा पर्दा, यह सब तो है न मेरे पास, सिर्फ एक आला नहीं होगा तो क्या फर्क पड़ेगा ? आला लटकाने की जगह राइफ़ल लटकाने से मेरी डॉक्टरी खत्म हो जायेगी क्या ?

तब आले ने कहा कि तेरा कोई ईमान धर्म है या नहीं? तूने तो इंसान की जान बचाने,उन्हें जीवन देने की शपथ ली थी?

तब डॉक्टर बोला कि मेरा धर्म यही है, मैंने जो भी किया है मेरे धर्म के अनुसार ही किया है,मेरा धर्म मुझे राइफ़ल की इजाज़त देता है आले की नहीं,आले को हम ताले में रखते हैं इसलिए चुपचाप पड़ा रह !

अब आला समझ चुका था कि दुनिया बदल चुकी है ,अब लुटेरे आयेंगे दानी के भेष में और भक्षक आयेंगे रक्षक के भेष में। आज के दौर में जान लेने का सबसे सरल तरीका यही है कि डॉक्टर बन जाओ, लोग आपको भगवान समझकर आयेंगे और आप उन्हें भगवान के पास पहुंचाएंगे,आसानी से स

पता नहीं कैसा वक़्त है हम पुलिस के हाथ से तो राइफल्स छीन रहे हैं और डॉक्टर के भेष में छिपे चंद दरिन्दे उस राइफल को धारण कर रहे हैं,इसीलिए सारे फसाद हो रहे हैं स अब वक़्त है कि हम डाक्टर का सिर्फ चोगा और टोपी देखकर भ्रमित ना हों, यह जरूर चेक करें कि डॉक्टर ने इंसानियत की पढ़ाई की है या नहीं ? हमारे देश में हमेशा से डॉक्टर को धरती के भगवान का दर्जा प्राप्त है,जिसे सिर्फ जान बचाने की तालीम दी जाती है, जान लेने की तालीम तो सिर्फ कसाई को दी जाती है, इसलिए डॉक्टर के पास जाने से पहले उसकी जांच पड़ताल जरूर कर लें कि वह डॉक्टर है या.....।

(विनायक फीचर्स)

मुरली का सारः मैं–पन की पूंछ जलाकर बापसमान बनो

बापदादा आज अपने बच्चों के तीन प्रकार के जमा खाते देख रहे हैंः

1. श्रेष्ठ प्रालब्ध जमा का खाताः अपने पुरुषार्थ द्वारा।

2. दुवाओं का खाताः सदा संतुष्ट रहने और करने की वृत्ति द्वारा।

3. पुण्य का खाताः मनसा–वाचा–कर्मणाॉ संबंध–संपर्क द्वारा बेहद की निःस्वार्थ सेवा द्वारा।

खज़ाने जमा करने की चाबी

इन तीनों खातों के जमा होने की निशानी हैः सदा सर्व के प्रतिॉ स्वयं के प्रति संतुष्टता स्वरूपॉ सर्व प्रति शुभ भावनाॉ शुभ कामना और स्वयं को सदा खुशनुमाॉ खुशनसीब स्थिति में अनुभव करना।

इन खज़ानों को जमा करने की चाबी हैः निमित्त भावॉ निर्माण भावॉ निःस्वार्थ भाव।

चाबी का नंबर है "तीन बिन्दी" (थ्री डॉट):

1. आत्मा बिन्दी

2. बाप बिन्दी

3. ड्रामा का फुलस्टॉप बिन्दी

समानता के मार्ग में विघ्न

खज़ानों की वृद्धि की विधि है दृढ़ताः दृढ़ता वाला निश्चयबुद्धि सदा अनुभव करेगा कि "हुआ ही पड़ा हैॉ बना ही पड़ा है"।

सबसे बड़ा विघ्न जो समान बनने में पड़ता हैॉ वह है "मैं" (मैं–पन / देह–अभिमान): बापदादा ने कहा है कि जब भी "मैं" बोलो तो जुड़वा शब्द बोलो – "मैं आत्मा"।

देह–अभिमान वाला "मैं" कभी अभिमान लाता हैॉ कभी अपमान और कभी दिलशिकस्त भी बनाता हैः इस "मैं–पन" को स्वप्न में भी नहीं आने दो।

बापदादा ने देखा है कि स्नेह की सब्जेक्ट में मेजॉरिटी बच्चे पास हैॉ अब समान बनने की सब्जेक्ट में भी पास विद ऑनर बनकर दिखाओ।

ज्वालामुखी तपस्या द्वारा समाप्ति को समीप लाओ

बापदादा ने हँसी में कहाः तुम महावीर होॉ लेकिन शास्त्रों के हनुमान समान अभी भी "मैं–पन" की पूंछ दिखाई है। जब तक इस पूंछ को नहीं जलाएंगेॉ तब तक लंका (पुरानी दुनिया) समाप्त नहीं होगी।

' इस "मैॉ मैं" की पूंछ को जलाने के लिए ज्वालामुखी तपस्या (साधारण याद नहीं) शक्तिशाली याद की आवश्यकता है।

' समान बन जाओगे तो समाप्ति सामने आएगी।

अब धुन लगी रहेः समान बनना ही हैॉ समाप्ति को समीप लाना ही है।

' दुःखी और भक्त आत्माओं पर रहम करॉ उन्हें मुक्तिधाम में भेजने के लिएॉ सिर्फ वाणी की सेवा नहीॉ बल्कि मनसा और वाणी की सेवा साथ–साथ हो।

सेवाधारी भवः चेहरा और चलन

आपका चेहरा बाप का परिचय दे और आपकी चलन बाप को प्रत्यक्ष करती चले। चलते–फिरते अपने चेहरे और चलन द्वारा बाप का परिचय देते चलो।

चार धामों की यादः मधुबन में चार धाम हैंः

1. शान्ति स्तम्भः महाधाम (शक्तिशाली बनने के लिए)।

2. बापदादा का कमराः स्नेह का धाम (समान बनने का दृढ़ संकल्प करने के लिए)।

3. झोपड़ीः स्नेह–मिलन का धाम (उदास होने पर रूहरिहान करने के लिए)।

4. हिस्ट्री हॉलः (वेस्ट थॉट्स बहुत तेज होने पर)।

वरदान और नमस्ते

वरदानः फिकर से फारिग बेफिक्र बादशाहों को, सर्व खज़ानों से सम्पन्न रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड बच्चों को, सदा समाप्ति को समीप लाने वाले बापदादा समान बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

दृढ़ संकल्पः सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। विजय हमारे गले की माला है। इस निश्चय और रूहानी नशे में अनुभवी स्वरूप होके बैठो।

हम बिहार की जनता के फ़ैसले का सम्मान करते हुए, ऐसी ताक़तों के खिलाफ़ अपनी लड़ाई जारी रखेंगे जो संवैधानिक संस्थाओं का दुरुपयोग कर, लोकतंत्र को कमज़ोर करने में जुटी हैं।

हम चुनाव के परिणामों का गहराई से अध्ययन करेंगे और नतीजों के कारणों को समझने के बाद विस्तृत बात रखेंगे।

बिहार में जिन मतदाताओं ने महागठबंधन का साथ दिया है, उनके हम तहे दिल से आभारी है।

कांग्रेस के हर कार्यकर्ता से कहना चाहता हूँ कि आपको हतोत्साहित होने की ज़रूरत नहीं। आप हमारी आन–बान–शान है। आपकी कड़ी मेहनत हमारी ताकत है।

हम जनता को जागरूक करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। जनता के बीच रहकर संविधान और लोकतंत्र को बचाने का संघर्ष जारी रखेंगे।

यह लड़ाई लंबी है – और हम इसे पूरी निष्ठा, साहस और सत्य के साथ लड़ेंगे।

रोशनी कर दो विधाः गीत

ज्योत से ज्योत जलाते चलो।
अंधेरे में रोशनी करते चलो।
राह में आये जो दीन दुखी
धैर्य उन्हें तो बांधते चलो।
दिलो में प्रेम जागते चलो,
प्यार की गंगा बहाते चलो।।
ज्योत से ज्योत.....।

प्रेम से तुम दिलो को जीतो।
प्रेम के भाव जगाओ,
लोगों के मन से
नफरत हटाओं
प्रेम की गंगा बहाओं।
जात पात को भूल कर
इंसानियत की गीत गाते चलो।।
प्रेम दिलो में जागते चलो,
प्यार की गंगा बहते चलो।
ज्योत से ज्योत.....।

हर कदम पर मिलेंगे दुश्मन,
तुम को डराने वाले।
लक्ष्य से तुमको
भटकाने वाले
बहुत मिलेंगे दुनियां में।
ऐसे लोगों के मन में तुम
ज्ञान की बातें बताते चलो।।
प्रेम दिलों में जागते चलो
प्यार की गंगा बहते चलो।
ज्योत से ज्योत.....।।

जय जिनेन्द्र
संजय जैन "बीना" मुम्बई

आजकल के समय प्रमाण सबसे अमूल्य श्रेष्ठ खजाना है - पुरुषोत्तम संगम का समय क्योंकि इस संगम पर ही सारे कल्प की प्रालब्ध बना सकते हो। इस छोटे से युग की प्राप्तियों और प्रालब्ध के प्रमाण एक सेकण्ड की वैल्यु एक वर्ष के समान है। इतना यह अमूल्य समय है। इस समय के लिए ही गायन है - "अब नहीं तो कब नहीं" क्योंकि इस समय ही परमात्म पार्ट बूंधा हुआ है इसलिए इस समय को हीरे तुल्य कहा जाता है।

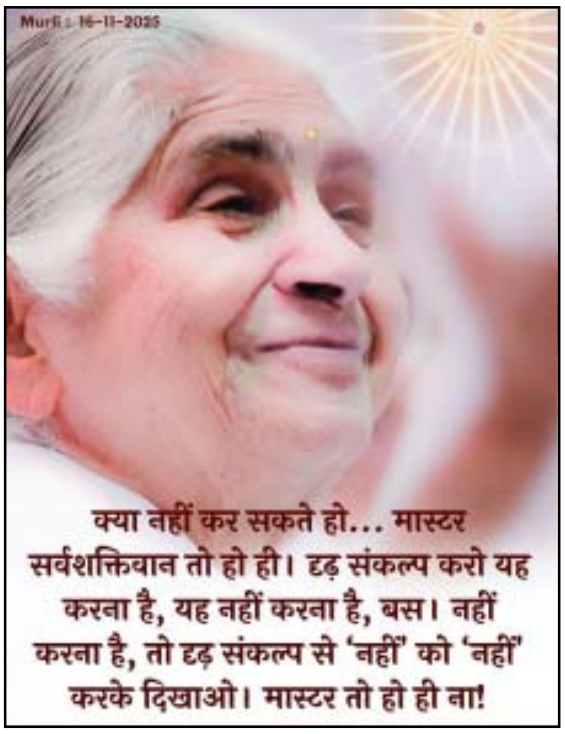

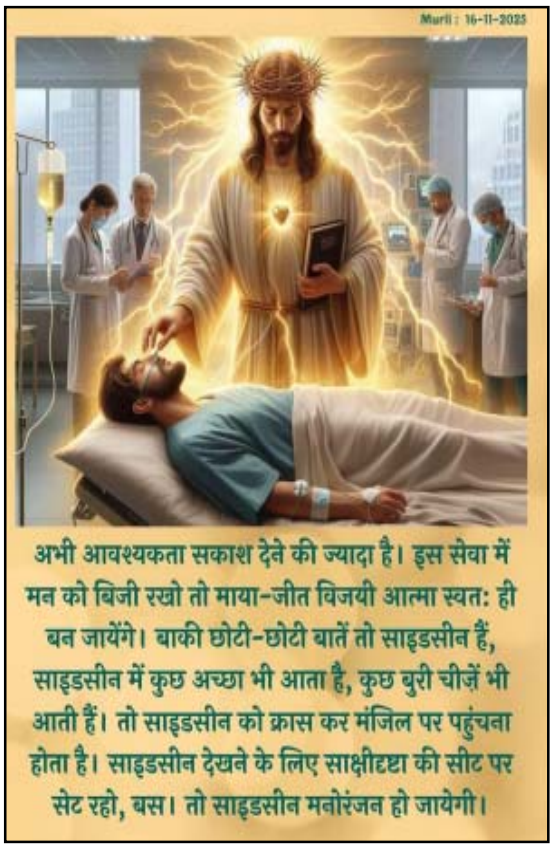

भोजपुरी गजल
हक होला हमार

जब चाही तब याद करी तोहके ई हक़ होला हमार।
केहू औरी बसल बा दिल में ई शक होला तोहार।

तोहरे नाम से ख्वाब महल बनाई ई मर्जी बा हमार।
ख्वाब महल पर हमरे हक पहिला बेशक होला तोहार ।

चाही कुछु और बोला डाल देब सब पांव में तोहरे हम।
छोड़ा चान तारा लिख दी ब्रह्माण्ड भरसक होला तोहार।

बोला त लिख दी दिल क सभ जायदाद ख़ज़ाना हम।
मुस्का दा प्यार से बस एतना दिल धक ई होला हमार।

तोहरे प्यार बेकार बा सब धन दौलत सोना औरी चानी।
देख झलक तोहार भाव अमीर अबतक होला हमार।

आदत हमके तरसावे छोड़ आजा लगाला दिल हमसे।
तोहरे प्यार में मर मिट जाई भारती सबक होला हमार।

श्याम कुंवर भारती (राजभर)
बोकारो,झारखंड

मुस्कारााना सीखो
विधा : कविता

जीवन की मुश्किलों से लड़ना सीखो।
हँसते हँसते यारो जिंदगी जीना सीखो।
लाख कांटो से क्यों न गिरे हो तुम।
पर मुस्कराना तो तुम गुलाब से सीखो।।

राहगीर राह को अपनी मर्जी से चुनते है।
ताकि मंजिल तक आराम से पहुँच सके।
भूलकर भी राहगीर राह बदलता नहीं है।
क्योंकि उसे अपनी मंजिल का पता है।।

जिंदगी के सफर में लाखों लोग मिलते है।
जो की अक्सर सभी अजनबी ही होते है।
कुछ अंजान होकर अपने लगने लगते।
तो कुछ अपने होकर अंजान बन जाते।।

सेवा और सत्कार तुम फूलों से सीखो।
जो हर रोज सभी के काम आते है।
कही स्वागत और पूजा में चढ़ाये जाते।
तो कही अर्थी समाधि पर सजाये जाते।।

जय जिनेंद्र
संजय जैन "बीना" मुंबई

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले को जल्द ही विश्व स्तरीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम मिलने वाला है

कैबिनेट बाई सर्कुलेशन के जरिए स्टेडियम की लागत करीब 392 करोड़ रुपये तय कर दी गई. लागत और बढ़ सकती है. न्यूनतम बोली लगाने वाली नागार्जुन कंस्ट्रक्शन कंपनी (एनसीसी) को विभागीय दर से अधिक दर पर ठेका देने के प्रस्ताव को मंजूरी मिल गई है. अब दो महीने के अंदर शिलान्यास और दो साल में निर्माण पूरा करने का लक्ष्य है. स्टेडियम का निर्माण इंजीनियरिंग, प्रोक्योरमेंट और कंस्ट्रक्शन (EPC) मोड पर होगा. गोरखपुर–वाराणसी फोरलेन के पास ताल नदौर में 50 एकड़ जमीन पर यह स्टेडियम बनेगा, जो कि उत्तर प्रदेश का चौथा अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम होगा. फिलहाल कानपुर और लखनऊ में अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम हैं, जबकि वाराणसी में तीसरा बनकर तैयार होने वाला है. गोरखपुर में बनने वाले स्टेडियम में 30,000 क्रिकेट प्रेमियों के बैठने की सुविधा होगी. 11 पिचें होंगी, जिसमें मुख्य मैदान और प्रैक्टिस की पिच शामिल है. अच्छी उपलब्धि..

–संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार–खेलकूद एवं विज्ञान (गोरखपुर)

स्वयं का जन्म दिन
विधा : कविता

खुदका जन्म दिन मनाना रहा हूँ।
देखो दुनियां वालो तुम।
कितना हर्षित और प्रफुल्लित हूँ।
अपने इस जन्म दिन पर मैं।।

एक वर्ष और कम हो गया।
अपनी आयु के वर्षो में से।
फिर भी देखो कितना खुश हूँ।
अपनी घटती हुई उम्र पर मैं।।

खुश नसीब मानता हूँ खुदको।
इसलिए आया दुनियां में।
कर्मो के बंधन के कारण ही।
पाया है मैंने मानव जन्म।।

खुदके जन्म को सार्थक करना है।
इसलिए मैं लिखता और गाता हूँ ।
और दुनियां की कु–रीतियों को।
मिटाने का प्रयास निरंतर करता हूँ।।

करना है मुझको दुनियां में।
मानव सेवा वाले काम।
जिससे खुदको जिंदा रख सकूँ।
दुनियां के इस मान चित्र पर।।

जय जिनेंद्र
संजय जैन "बीना" मुंबई

'बीएमसी चुनाव 2025 – सभी इच्छुक उम्मीदवारों के लिए विशेष सूचना

एक इंटरैक्टिव सत्र तथा चुनाव प्रबंधन तकनीकों में गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम, जो एक प्रसिद्ध कानूनी विशेषज्ञ (वकील) द्वारा आयोजित किया जाएगा जिनके पास चुनाव प्रबंधन में सिद्ध एवं गहन अनुभव है, रविवार, 16 नवंबर 2025 को सुबह 10 बजे ठीक से 11 बजे तक एकता एनजीओ मुलुंड कार्यालय, नेताजी सुभाष रोड, मुलुंड (पश्चिम) में आयोजित किया जाएगा। सभी इच्छुक व्यक्ति अपने पूर्ण प्रोफाइल के साथ–साथ अपनी संबंधित प्रमाण पत्र (दस्तावेज) सत्यापन के उद्देश्य से लेकर आएं। यह कार्यक्रम मुंबई क्षेत्रीय कांग्रेस कमेटी के निर्देशानुसार तथा श्री राकेश शंकर शेट्टी, माननीय प्रवक्ता, महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमेटी एवं महासचिव, मुंबई क्षेत्रीय कांग्रेस कमेटी की पहल पर आयोजित किया जा रहा है।

मोबाइलः +919821555923 / +919867976666 / +918452037666

भोजपुरी कविता –भारत में का बा

पूछी केहू की भारत में का बा कह देब ईहां मथुरा औरी कासी बा।
कंकर कंकर शंकर कण कण में शिव महाकाल अविनाशी बा।

गोरखपुर में गुरु गोरखनाथ आजमगढ़ बिराजे धाम शीतला माई के ।
राम जन्म भूमि अयोध्या में शोभे मिर्जापुर धाम विंध्याचल माई के।
देश क शान लाल किला इंडियागेट दिल्ली दिल वालन के वासी बा।

बनारस में हिंदू विश्वविद्यालय गंगा के पावन धारा घाट घाट पाप हरे।
उत्तराखंड ऋषि केश हरिद्वार चारों धाम दर्शन कई के हर ताप हरे।
ऊंच पहाड़ विराजे माई वैष्णो जम्मू काश्मीर में भगत दास दासी बा।

गरजे बरसे देश जवान के घुस दुश्मन के मांद तंबू उनकर उखाड़ेले।
राफेल विक्रांत मिसाइल ब्रम्होस उड़ आतंकी पाखंडी तिनका उड़ावेले।
देख तीनो सेना के जलवा कमाल दे ले लोगवा बढ़ी चढ़ी के शाबाशी बा।

उज्जैन विराजे महाकाल देवघर बाबा वैद्यनाथ के महिमा सगरो गुंजेले।
तारापीठ में तारा माई कलकत्ता मे काली गोहाटी कामख्या के पुजेले।
दक्षिण में रामेश्वरम सागर उतर खाड़ हिमालय कैलाश शिव संन्यासी बा।

गुरुनानक संत कबीर महावीर महात्मा बुद्ध क पावन धरती भारत कहावेला।
राम कृष्ण परशुराम नरसिंह विष्णु अवतार पूजित आर्यावर्त बतावेला।
गांधी सुभाष टैगोर तिलक आजाद भगत खुदी वीर कथा बड़ा खासी बा।

हमरे देश गीता वेद पुराण उपनिषद औरी रामायण सुनावल जाला।
महाराणा वीर शिवा जी रानी लक्ष्मी चौहान पृथ्वी इतिहास पढ़ावल जाला।
अंग्रेजन क छुड़ावें छक्का तीर धनुष ले झारखंडी वीर बिरसा आदिवासी बा।

जेवन मिले ना कही उ भारत में पावल जाला बड़ा निमन कहावल जाला।
कोहिनूर हीरा बाड़े लोग इहाँ के चमक दमक से देश नाम बढ़ावल जाला।
धन धन बा भारत क माटी मिथिला बिहार सीता पति राम बनवासी बा।

श्याम कुंवर भारती (राजभर)
बोकारो, झारखण्ड

बिहार विधानसभा के चुनाव परिणामों के निहितार्थ

लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुनाव व्यवस्था को बार बार कटघरे में खड़ा करने का प्रयास बिहार चुनावों में भी विफल सिद्ध हुआ। बिहार विधानसभा चुनाव के परिणामों ने सिद्ध कर दिया कि लोकतंत्र में झूठे विमर्श और भ्रामक प्रचार को मतदाता स्वीकार करने के लिए तैयार नही है। चुनाव परिणामों ने उन राजनीतिक दलों को सत्य का दर्पण दिखा दिया, जो यह समझते थे, कि उनके द्वारा स्थापित किया जाने वाला वोट चोरी का अप्रमाणिक विमर्श ही सत्य है। अप्रत्याशित चुनाव परिणामों ने यह भी स्पष्ट कर दिया, कि मतदाता पूर्व की अपेक्षा अधिक जागरूक है तथा वह अकल्पनीय वादों पर विश्वास नहीं करता।

बिहार चुनाव परिणामों ने जाति आधारित वोट बैंक के भरम को भी तोड़ दिया,कि जातियां किसी विशेष राजनीतिक दल की बपौती हैं, यही नहीं उन वंशवादी राजनेताओं को भी जमीनी दर्पण दिखा दिया, जो काल्पनिक बातें करके मनगढंत विमर्श से मतदाताओं को गुमराह करने के लिए किसी भी हद तक अराजकता की स्थिति उत्पन्न कर सकते थे। वस्तुस्थिति यह है, कि बिहार के चुनाव परिणामों ने चुनाव आयोग की विश्वसनीयता और पारदर्शिता को बरक़रार रखा तथा अपने निहित स्वार्थों के लिए देश की चुनाव व्यवस्था को बदनाम करने वाले तत्वों की कलई खोल कर रख दी।

यहाँ इस सत्य को नहीं नाकारा जा सकता, कि हार की खीज सहजता से नहीं मिटाई जा सकती, यदि ऐसा न होता, तो अपनी जमीनी सच्चाई को दरकिनार करते हुए राजनेता पूर्व से ही चुनाव आयोग, चुनाव व्यवस्था को कटघरे में खड़ा न करते। कभी वोट चोरी, कभी ईवीएम में गड़बड़ी, कभी स्लो काउंटिंग, कभी मतदाता सूची में गड़बड़, कभी विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया की विश्वसनीयता पर सवाल उठाकर कुछ राजनीतिक दल निष्पक्ष चुनाव प्रक्रिया में विघ्न डालने का प्रयास न करते।

निसंदेह बिहार विधानसभा चुनाव देश में चुनाव सुधारों की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में मील का पत्थर सिद्ध होगी तथा चुनावों को मनगढ़ंत विमर्श से प्रभावित करने वाले राजनीतिक दलों के प्रति विश्वसनीयता को कम करेगी। ऐसा समझा जाना अपेक्षित है।

डॉ. सुधाकर आशावादी
(विनायक फीचर्स)

तीरंदाजी में भारत के अंकिता भकत एवं धीरज को स्वर्ण पदक..

भारत के अंकिता भकत ने दक्षिण कोरिया की नाम सुहयोन को 7–3 से हराकर और भारतीय धीरज बोम्मादेवरा ने हमवतन राहुल

को 6–2 से हराकर ढाका में एशियाई तीरंदाजी चैंपियनशिप की व्यक्तिगत रिकर्व स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। दोनों को बधाई..

संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार खेलकूद एवं विज्ञान (गोरखपुर)

इसरो (ISRO) अंतरिक्ष यान उत्पादन क्षमता को तीन गुणा तक बढ़ाएगा....

भारत अंतरिक्ष में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है, इस सफलता के पीछे इसरो के तमाम वैज्ञानिकों हाथ है। इसरो अब दुनिया को एक बार फिर अपनी ताकत दिखाने के लिए तैयार, इस वित्तीय वर्ष में 7 और लॉन्चिंग की जाएंगी। साथ ही भारत का पहला मानव अंतरिक्ष यान 2027 तक भेजे जाने की योजना पर भी काम चल रहा है। इसरो के अध्यक्ष वी. नारायणन ने एक इंटरव्यू में यह भी बताया कि इसरो अंतरिक्षयान उत्पादन क्षमता को तीन गुणा तक बढ़ाएगा।पीटीआई को दिए गए इंटरव्यू में इसरो के अध्यक्ष वी. नारायणन ने बताया कि इसरो विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्योग क्षमता में तेजी से विस्तार के दौर में है। इसरो सात और लॉन्च की योजना बना रहा है, जिसमें एक कॉमर्सिएल कम्युनिकेशन सैलेटाइट और कई पीएसएलवी (PSLV) और जीएसएलवी (GSLV) मिशन शामिल हैं। एक खास बात यह होगी कि पहला पीएसएलवी पूरी तरह से भारतीय होगा।

–संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार
विज्ञान, खेलकूद एवं सचिव–इंडियन साइंस राइटर्स एसोसिएशन (ISWA) (उप्र) (गोरखपुर)

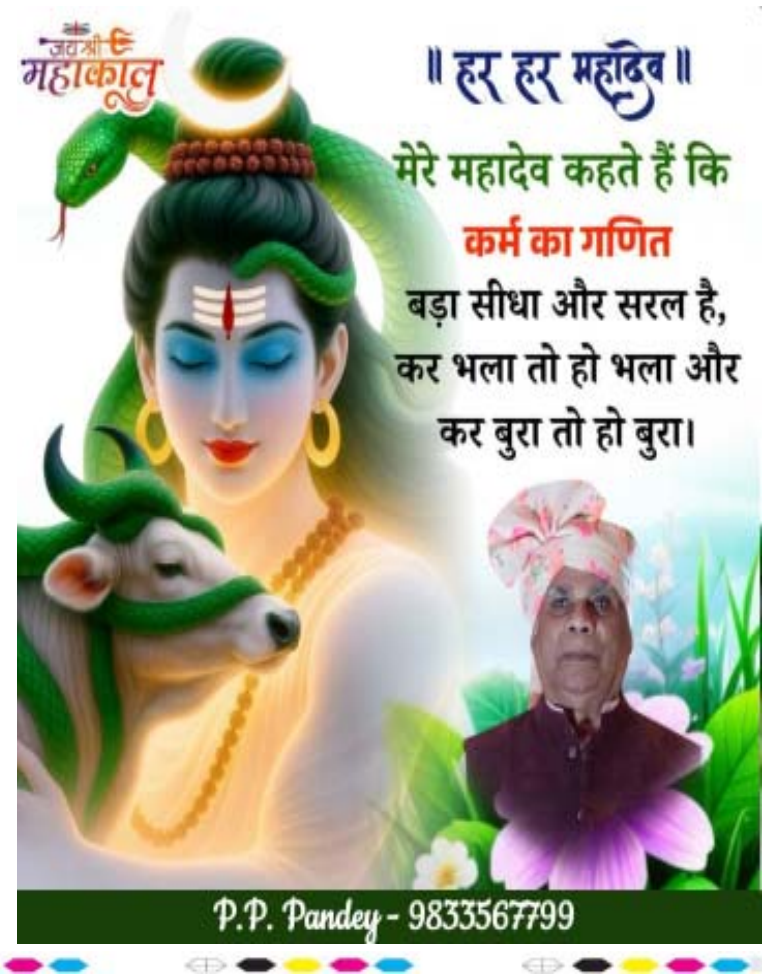

गोरखपुर की आन –बान –शान गीता प्रेस (गोरखपुर) पर विशेष .....

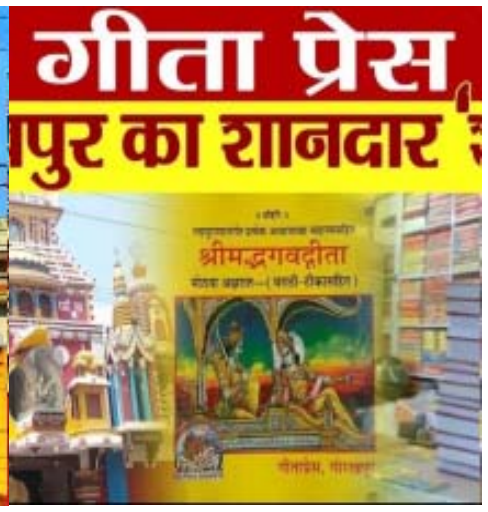

गीताप्रेस के मुख्य द्वार व लीला चित्र मंदिर का उद्घाटन प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने 1955 में किया था। उनके बाद राम नाथ कोविन्द पहले राष्ट्रपति हैं, जो शनिवार को गीताप्रेस में आए। उन्होंने लीला चित्र मंदिर में देवी देवताओं का दर्शन करने के बाद आम जन को संबोधित किया। आइए गीताप्रेस के पृष्ठभूमि पर कुछ चर्चा करते हैं....गीता प्रेस की उपलब्धि का आकलन इसी से किया जा सकता है कि अब तक यहां से विभिन्न भाषाओं में 70 करोड़ से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। यह हिंदुओं की धार्मिक पुस्तकों का विश्व का सबसे बड़ा प्रकाशक है। गीता प्रेस सिर्फ एक प्रकाशन नहीं, बल्कि एक भावना है, क्योंकि तमाम वित्तीय दबावों के बावजूद इसने लोगों को सस्ती कीमतों में धार्मिक पुस्तकें उपलब्ध करवाना कभी नहीं छोड़ा, ना ही कभी इस मामले में इसका इरादा अपने लक्ष्य से भटक पाया। आज भी गीता प्रेस से 1850 प्रकाशन हो रहे हैं। इनमें 760 अकेले संस्कृत और हिंदी भाषाओं में हैं। इनके अलावा अंग्रेजी, पंजाबी, ऊर्दू, नेपाली, गुजराती, मराठी, तेलगू, बंगाली,उड़िया, तमिल, कन्नड़, असमी और मलायलम में प्रकाशित होती हैं। गीता प्रेस सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन ऐक्ट, 1860 (वर्तमान में वेस्ट बेंगाल सोसाइटीज ऐक्ट, 1960) के तहत गोबिंद भवन कार्यालय की एक यूनिट है। इसकी स्थापना 29 अप्रैल, 1923 को जयदयाल गोयन्दका ने भगवद गीता के ज्ञान को उसी स्वरूप में जन–जन तक पहुंचाने के लक्ष्य के साथ की थी। जिनका लक्ष्य सनातन साहित्य को कम से कम दाम में लोगों तक पहुंचाना था, ताकि उन तक गीता का ज्ञान पहुंच सके, जिसमें समाज और पूरे ब्रह्मांड का कल्याण समाहित है। इस संस्था का मूल दृष्टिकोण सनातन धर्म से संबंधित विचारों को बढ़ावा देना और फैलाना है। जिसके लिए गीता, रामायण, उपनिषद, पुराण,दुर्गा सप्तशति,भक्त–धटक, प्रख्यात संतों के वचनों और अन्य चरित्र–निर्माण पुस्तकों और पत्रिकाओं को बहुत ही मामूली कीमत पर बेचा जाता है। धार्मिक ग्रंथों के एशिया महाद्वीप के सबसे बड़े प्रेस गीताप्रेस को नई उड़ान मिली है. निश्चित रूप से कई कारको के बीच अगर आज गोरखपुर की "पहली" पहचान "गीता प्रेस" को कहे तो कोई अतिशोक्ति नहीं होगा।

–संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार
–सामाजिक विज्ञान विज्ञान एवं खेलकूद (गोरखपुर).

देश के बेटियों में "क्रिकेट" की बेटियों के आगे "हॉकी" की बेटियां भी है... इसे भी सम्मान दे... नहीं तो इसके साथ न्याय नहीं होगा..

भारतीय हॉकी टीम ओलंपिक खेलों में उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 1980 के मास्को ग्रीष्मकालीन ओलंपिक (जहां वे चौथे स्थान पर आई) में था, जब ओलंपिक इतिहास में पहली बार महिलाओं का कोई आयोजन हुआ था। टीम ने नई दिल्ली में आयोजित 1982 के पहले एशियाई खेलों के फाइनल में कोरिया को हराकर स्वर्ण पदक भी जीता और ओलंपिक एवं अन्य में बहुत अच्छी स्थिति में रहा. अभी एशिया कप में भी भारत फाइनल में चीन से हारा अर्थात उप–विजेता रहा. यह ओलंपिक और विश्व कप में भी संघर्ष कर रही है और परिणाम बेहतर होते जा रहे हैं। यहां यह मत भूलिए कि यह हॉकी है, इसे ओलंपिक में भी स्थान दिया गया है जबकि क्रिकेट "गैर–ओलंपिक" खेल है और लगभग 20–22 देश में ही खेला जाता है जबकि हॉकी लगभग 50–52 देश में खेला जाता है. सबसे बड़ी बात की क्रिकेट की बेटियां "आर्थिक" रूप से बहुत –बहुत कमजोर है, ज्यादातर और बहुत जीवन से आर्थिक रूप से भी जूझ रही है लेकिन एक जज्बा है। जबकि क्रिकेट की बेटियां ज्यादातर अच्छे मजबूत आर्थिक स्थिति में रहने के कारण ग्लैमर में भी है। हॉकी की बेटियां तो ग्लैमर से बहुत दूर अपने–अपने जीवन में ही जूझ रही है। अतः अनुरोध है हॉकी के बेटियों के लिए भी प्रार्थना करें, पढ़े, देखें, उत्साहित करें, नहीं तो यह न्याय नहीं होगा।

भारत की महिला हॉकी टीम ने एशियाई चैम्पियंस ट्रॉफी में सभी 5 मैच जीते, लेकिन दुख की बात है कि किसी ने भी उनका समर्थन या ताली नहीं बजाई।

– संजय वर्मा, स्वतंत्र पत्रकार
खेलकूद एवं विज्ञान (गोरखपुर)

अगर आज इंदिरा गांधी जी होती..... तो पाकिस्तान छोड़िए अमेरिका भी भारत से थर–थर कांपता

दुनिया की राजनीति में अभी तक सिर्फ एक महिला ऐसी पैदा हुई, जिसके साहस, जिसके संकल्प और जिसकी दूरदर्शिता देखकर दुनिया उसे आयरन लेडी कहने पर मजबूर होना पड़ा।

और उनका नाम था– इंदिरा गांधी। उन्होंने अपनी दृढ़ता से अपने देश के लिए ऐसे–ऐसे फैसले लिए हैं....जिसको कोई और नहीं ले सकता था।

आज उनकी 108वें जन्मदिन पर पूरा देश उनको याद कर रहा है। देश के लोग उन्हें नमन कर रहे हैं।

आज उनकी कमी देश को खल रही है। आज वो जिंदा होती तो पाकिस्तान की बात तो छोड़ दीजिए, अमेरिका और चीन की औकात भी भारत को आंख दिखाने की ना होती।

1971 के भारतदृपाक युद्ध के समय जब अमेरिका भारत के खिलाफ सांतवा बेड़ा भेजने की धमकी दे रहा था, तब इंदिरा ने अमेरिका के राष्ट्रपति निक्सन को उसकी औकात बताते हुए कहा था कि निक्सन तुम 7वां नहीं 70वां बेड़ा भेज दो लेकिन याद रखना कि अब पाकिस्तान को दुनिया की कोई ताकत नहीं बचा पाएगा।

और हुआ वही, जो इंदिरा ने चाहा। पाकिस्तान के टुकड़ों हो गए, इंदिरा ने नया देश बनाया बांग्लादेश।

1975 में सिक्किम का भारत में विलय कराने की बात हो या दुनिया की तमाम धमकियों के बीच पोखरण में परमाणु परीक्षण कराने की बात हो, इंदिरा ने जो किया जो किया पूरी ताकत और डंके की चोट पर किया।

अलगाववाद, विद्रोह और आर्थिक अस्थिरता जैसे मुद्दों से उन्होंने जिस तरह मुकाबला किया, उसका उदाहरण दुनिया के किसी नेता में नहीं दिखता।

अप्रैल, 1984 में जब उन्हें पता चला कि पाकिस्तान सियाचिन में बदमाशी कर रहा है तो उन्होंने पाकिस्तान का ऐसा बुखार छुड़ाया कि पाकिस्तान सियाचिन छोड़कर हमेशा के लिए भाग गया। और सियाचिन पर भारत ने कब्जा किया।

1969 में 14 बड़े निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण हो या हरित क्रांति को गति देने की बात हो या गरीबों के लिए रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य और उनकी भलाई के लिए गरीबी हटाओ योजन की बात हो...उन्होंने देश के करोड़ों लोगों को नई जिंदगियां दी।

राजघरानों के पेंशन को खत्म कर देश में सार्वजनिक सेक्टर की क्रांतिकारी स्थापना का श्रेय भी इंदिरा जी को ही जाता है।

इंदिरा जी कहती थी कि अगर मैं मरूंगी तो मेरी खून का एक–एक कतरा देश के काम आएगा.....ऐसी बोल्ड सोच थी, उस महान नेता की। न देश के स्वाभिमान से कभी समझौता किया, न ही खुद की आलोचना से कभी घबराई।

जब कभी ये सोचता हूं कि अगर उस वक्त इंदिरा गांधी के अलावा कोई और प्रधानमंत्री होता तो क्या ये साहसिक निर्णय ले पाता..... ईमानदारी से कहूं तो शक होता है।

फिर से उस ग्रेट आयरन लेडी को नमन

ज्ञान सरोवर
(हिन्दी साप्ताहिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर–8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।

सम्पादक

पूजा प्रसाद पाण्डेय

मो0– 9833567799

R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377

Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।